महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय

जंगल धूसड़- गोरखपुर

फोन नं0 : 0551–6827552, 2105416

मो. : 9794299451

Website: www.mpm.edu.in

E-mail : mpmpg5@gmail.com

स्थापित २००५ ई.

पत्रांक : ..... दिनांकः 18.02.2016

प्रकाशनार्थ

गोरखपुर। 18 फरवरी। जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय, दिल्ली एवं जादवपुर विश्वविश्वविद्यालय, कलकत्ता में राष्ट्रीय विरोधी गतिविधियाँ मजहबी आतंकवाद, नक्सलवाद एवं वामपंथियों के नापाक गठजोड़ का परिणाम है। दुनिया में भारत की बढ़ती शाख से बौखलाकर ये ताकतें भारत को बदनाम करने की साजिश के तहत ऐसी हरकतें कर रही हैं। असहिष्णुता एवं असहमति जैसे अभियान भी इसी राष्ट्र विरोधी गतिविधि की कड़ी है। भारत सरकार को बिना किसी दबाव में आए इन राष्ट्र विरोधी तत्त्वों के खिलाफ कठोरतम् कार्रवाई करनी चाहिए। राष्ट्र विरोधी क्रियाकलाप किसी भी कीमत पर स्वीकार नहीं किए जा सकते। समाज भी मौन नहीं रह सकता। राष्ट्र विरोधी कृत्यों पर मौन रहना भी अपराध है। अब मौन तोड़ने का समय आ गया है। उक्त बातें वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर के **पूर्व कुलपति प्रो. उदय प्रताप सिंह** ने महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़ में जे.एन.यू. तथा जादवपुर विश्वविद्यालय में राष्ट्र विरोधी गतिविधियों के विरुद्ध आयोजित 'एक संवाद–देश के लिए' कार्यक्रम में कही।

'संवाद' में राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद के **पूर्व कुलपति प्रो. राम अचल सिंह** ने कहा कि राष्ट्र विरोधी कृत्यों का जनता मुखर विरोध करें। इनके विरुद्ध उत्पन्न जनाक्रोश 'जनमत' की ताकत में बदलना चाहिए तभी राष्ट्र विरोधी ताकतों को उनकी ही भाषा में उत्तर मिलेगा।

माध्यामिक शिक्षा परिषद् उत्तर प्रदेश के **पूर्व निदेशक डॉ. एल.पी. पाण्डेय** ने कहा कि नामी विश्वविद्यालयों में राष्ट्र विरोधी कृत्य से पूरा देश आहत है। किन्तु हमें यह समझना होगा कि राष्ट्र विरोधी गतिविधियों में लिप्त दिखाई दे रहे चेहरे मात्र मोहरे हैं, नेपथ्य में खड़ी ताकतों की पहचान करनी होगी और संविधान सम्मत कठोरतम् कार्रवाई करनी होगी। शिक्षा को चरित्र निर्माण का सशक्त एवं सबल माध्यम बनाना होगा।

राजनीतिशास्त्र विभाग के **पूर्व अध्यक्ष प्रो. सी.बी. सिंह** ने कहा कि अनुशासन जनतन्त्र की शोभा है। अभिव्यक्ति की आजादी की भी सीमा है। राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता को चुनौती स्पष्टतः राष्ट्र द्रोह है। हिन्दी विभाग के अवकाश प्राप्त **आचार्य प्रो. सदानन्द प्रसाद गुप्त** ने कहा कि जे.एन.यू. राष्ट्र विरोधी तत्त्वों की नर्सरी रही है। नक्सलवाद एवं मजहबी आतंकवाद को वैचारिक खुराक हमेशा जे.एन.यू., अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय एवं कलकत्ता विश्वविद्यालय से मिलता रहा है। इनके विरुद्ध कभी कार्यवाही हुई ही नहीं अतः मनोबल बढ़ता गया। राजनीतिशास्त्र विभाग के **पूर्व अध्यक्ष प्रो. राजेश सिंह** ने कहा कि मजहबी आतंकवाद, नक्सलवाद एवं वामपंथी गठबन्धन को वोट की राजनीति में माहिर कांग्रेस का सदैव मौन समर्थन रहा। परिणामतः उच्च शैक्षणिक संस्थान इनकी वैचारिक खुराक का केन्द्र और नौजवानों को गुमराह करने का अड्डा बन गया। भारतीय संविधान का अनु. 19 अभिव्यक्ति की

(क्रमशः 2)

आजादी का असीमित अधिकार नहीं देता। राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता के विरुद्ध बोलने का अधिकार तो नहीं ही देता है। **विधि विशेषज्ञ डॉ. टी.एन. मिश्रा** ने कहा कि नामी–गिरामी कुछ केन्द्रीय विश्वविद्यालय अपने स्थापना के उद्देश्यों को पूर्ण करने में असफल हुए हैं। जे.एन.यू. ने विश्वविद्यालयों की भूमिका, छात्रसंघ की भूमिका एवं शिक्षकों की भूमिका पर प्रश्नचिन्ह खड़ा कर दिया है। भारतीय संविधान के अनु. 14 से 18 मौलिक अधिकार एवं 19 से 22 स्वतन्त्रता का अधिकार देते हैं किन्तु लक्ष्मण रेखा के साथ।

छात्रसंघ के **पूर्व अध्यक्ष श्री शीतल पाण्डेय** ने कहा कि जे.एन.यू. एवं जादवपुर विश्वविद्यालय ने छात्रसंघ को कलंकित किया है। हम इस घटना से शर्मिन्दा हैं। यह कृत्य अप्रासंगित होते जा रहे छात्रसंघ को और कमजोर करेगा। दिग्विजयनाथ पी.जी. कालेज के मुख्य नियन्ता एवं **रक्षा अध्ययन विभाग के प्रभारी डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह** ने कहा कि कांग्रेस, वामपंथ और मजहबी वोट बैंक के कुटिल गठबन्धन की पोल खुली है। नवल्स पी.जी. कालेज के **प्राचार्य डॉ. ओमजी उपाध्याय** ने कहा कि मैं जे.एन.यू. का छात्र रहा हूँ। हमने नजदीक से वहाँ वामपंथियों का नग्न ताण्डव देखा है, आज वह उजागर हुआ है। कांग्रेस के संरक्षण के कारण इनका मनोबल बढ़ता रहा। दिग्विजयनाथ पी.जी. कालेज में बी.एड. विभाग के प्राध्यापक विद्यार्थी परिषद् के प्रदेश अध्यक्ष **डॉ. राजशरण शाही** ने कहा कि भारत के पैसों पर चलने वाले जे.एन.यू. में राष्ट्र विरोधी गतिविधियों की इजाजत नहीं दी जा सकती।

महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़ के प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार राव ने प्रस्ताविकी रखते हुए कहा कि मुट्ठी भर राष्ट्र विरोधी तत्त्वों से उच्च शिक्षण संस्थाओं पर कलंक लगा है। आज इसके मुखर प्रतिरोध में शिक्षण संस्थाओं को आगे आना होगा। संवाद का संचालन छात्रसंघ महामंत्री श्री सतीश पाण्डेय ने किया। इस संवाद कार्यक्रम में लगभग डेढ़ दर्ज महाविद्यालयों के बी.एड. , एम.एस–सी., एम.ए. के विद्यार्थियों सहित शिक्षक सम्मिलित हुए।

संवाद के अन्त में एक आठ सूत्री प्रस्ताव पर सबने हस्ताक्षर कर प्रधानमंत्री को भेजने का निर्णय लिया। आठ सूत्री मांग निम्नवत है–

1. राष्ट्र विरोधी गतिविधियों में संलिप्त तथाकथित विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के विरुद्ध कठोरतम् कार्रवाई की जाय।
2. राष्ट्र विरोधी गतिविधियों में संलिप्त विद्यार्थियों को काली सूची में डालकर इनका प्रवेश निरस्त किए जाएँ।
3. राष्ट्र विरोधी गतिविधियों में संलिप्त विद्यार्थियों के समर्थन में आए शिक्षकों की सेवा समाप्त की जाय।
4. राष्ट्र विरोधी गतिविधियों को समर्थन देने वाले राजनीतिक तत्वों पर अंकुश लगाया जाय।
5. देश के सभी उच्च शिक्षा संस्थानों के स्वरुप, पाठ्यक्रम, उनके संचालन एवं ढाँचागत स्वरुप की पूर्णतः समीक्षा कर राष्ट्रीयता केन्द्रित बनाया जाय।
6. उच्च शिक्षा परिसरों में मजहबी आतंकवाद, नक्सलवाद एवं साम्यवादी संगठनों के बीच नापाक गठबन्धन को उजागर किया जाय।
7. कुलपतियों को जवाबदेह बनाया जाय। जिन विश्वविद्यालय परिसरों में राष्ट्र विरोधी गतिविधियों का प्रमाण मिले, वहाँ के कुलपति के खिलाफ कार्यवाही की जाय।
8. राष्ट्र विरोधी गतिविधियों में संलिप्त लोगों का सामाजिक बहिष्कार किया जाय।

(क्रमशः 3)

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय

जंगल धूसड़- गोरखपुर

स्थापित २००५ ई.

फोन नं0 : 0551–6827552, 2105416
मो. : 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

पत्रांक......................... दिनांक : 18.02.2016

सेवा में,
माननीय प्रधानमंत्री
भारत सरकार
महोदय,

जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय, दिल्ली एवं जादवपुर विश्वविद्यालय, कलकत्ता में तथाकथित विद्यार्थियों की राष्ट्र विरोधी गतिविधियों से हम सभी स्तब्ध हैं। **महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर** में आयोजित **''एक संवाद–देश के लिए''** कार्यक्रम में उपस्थित हम सभी इसकी घोर भर्त्सना करते हैं। आप से आग्रह करते हैं कि–

1. राष्ट्र विरोधी गतिविधियों में संलिप्त ~~तथाकथित~~ विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के विरुद्ध कठोरतम् कार्रवाई की जाय।
2. राष्ट्र विरोधी गतिविधियों में संलिप्त विद्यार्थियों को काली सूची में डालकर इनका प्रवेश निरस्त किए जाएँ।
3. राष्ट्र विरोधी गतिविधियों में संलिप्त विद्यार्थियों के समर्थन में आए शिक्षकों की सेवा समाप्त की जाय।
4. राष्ट्र विरोधी गतिविधियों को समर्थन देने वाले राजनीतिक तत्वों पर अंकुश लगाया जाय।
5. देश के सभी उच्च शिक्षा संस्थानों के स्वरुप, पाठ्यक्रम, उनके संचालन एवं ढाँचागत स्वरुप की पूर्णतः समीक्षा कर राष्ट्रीयता केन्द्रित बनाया जाय।
6. उच्च शिक्षा परिसरों में मजहबी आतंकवाद, नक्सलवाद एवं साम्यवादी संगठनों के बीच नापाक गठबन्धन को उजागर किया जाय।
7. कुलपतियों को जवाबदेह बनाया जाय। जिन विश्वविद्यालय परिसरों में राष्ट्र विरोधी गतिविधियों का प्रमाण मिले, वहाँ के कुलपति के खिलाफ कार्यवाही की जाय।
8. राष्ट्र विरोधी गतिविधियों में संलिप्त लोगों का सामाजिक बहिष्कार किया जाय।

महोदय, राष्ट्र विरोधी गतिविधियों का यदि कठोरतापूर्वक दमन नहीं किया गया तो यह राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता के समक्ष बड़ी चुनौती होगी।

क्रम.	नाम	पद/पता	हस्ताक्षर
1.	प्रो० उदय प्रताप सिंह	पूर्व कुलपति, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर	उ० प्र० सिंह
2.	प्रो० राम अचल सिंह	पूर्व कुलपति, डॉ० राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद	राम अचल सिंह
3.	डॉ० एस.पी. पाण्डेय	पूर्व निदेशक, माध्यमिक शिक्षा उत्तर प्रदेश	[illegible]
4.	प्रो० सी.बी. सिंह	पूर्व अध्यक्ष, राजनीति शास्त्र विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर	[illegible]
5.	प्रो० सदानन्द प्रसाद गुप्त	अवकाश प्राप्त आचार्य हिन्दी विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय	[illegible]

173 लोगों के हस्ताक्षर